गुरुदेव ने कई किरदार निभाए। एक ऑफिस कर्मचारी, जिन्हें काम के बदले वेतन मिलता था। एक महागुरु, जिन्हें लोगों की मदद और उनका मार्गदर्शन करना था। आध्यात्म के एक उपासक, जिन्हें अलौकिक यात्रा, मंत्र विद्या, क्रिया और उपचार करना होता था। और एक पारिवारिक इंसान, जिन्हें कईयों का सहारा बनना, उनका ख्याल रखना और उनका पालन पोषण करना था।

द फैमिली मैन

गुरुदेव गृहस्थ आश्रम में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे अपने आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ते हुए एक गृहस्थ की तरह जिंदगी जीते थे।

विवाह के पश्चात, लेकिन अपने महागुरु अवतार से पूर्व, उन्होंने गहन ध्यान और अन्य आध्यात्मिक क्रियाओं का अभ्यास करने के लिए अपने गृहस्थ जीवन से दूरी बना ली थी.

एक बार अमृतसर स्थित संतोकसर झील पर जब वे एक उच्च ध्यान की मुद्रा में थे, तभी उन्हें एक आकाशवाणी सुनाई दी, कि उनकी आध्यात्मिक यात्रा या साधना तभी पूर्ण होगी जब वे अपने गृहस्थ आश्रम में लौट कर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभायेंगे। उन्होंने जो आकाशवाणी सुनी थी, वो संभवतः बुड्ढे बाबा की लीला थी,जो उनके आध्यात्मिक गुरु और मार्गदर्शक थे।

उनका विकसित स्वरूप भविष्य के पन्नों में छिपा था, लेकिन इस मुकाम पर तो वे उन घटनाओं या स्थिति को देख पाने में सक्षम नहीं थे, जो भविष्य ने उनके लिए पहले ही तय कर रखी थीं। तो वे अपनी पत्नी के पास वापस लौटे और पहले दिल्ली में और बाद में गुड़गांव के शिवपुरी में अपना घर बसाया।

पाँच बच्चों को जन्म देकर उन्होंने पांच आत्माओं को यह अवसर दिया कि वे जन्म लेकर अपने उद्देश्य पूर्ण करें। इसी के साथ-साथ उन्होंने अपने दादा, पिता और अपने रिश्तेदारो को अपने

बच्चों के रूप में जन्म देकर उनका ऋण भी चुकाया जिन्होंने उनके बचपन में उनके शारीरिक स्वरूप की परवरिश करके उन्हें कृतज्ञ किया था।

अपने इन परिजनों को अपनी संतान के रूप में जन्म देकर और उनका पालन पोषण एवं परवरिश करके गुरुदेव उनके ऋण से मुक्त हुए।

एक पति के रूप में वो बड़े मजाकिया थे, लेकिन अपनी पत्नी के लिए काफी मुश्किलों की वजह भी थे। हम जैसे बेपरवाह लोग रात के डेढ़-दो बजे तक गुरुदेव का साथ नहीं छोड़ते थे और माता जी को हमारी मौजूदगी में ही आराम करना पड़ता था।

अक्सर गुरुदेव माता जी को नींद से जगा देते थे और कहते, "ओ मास्टर, आप्पे बचियानू चाय नहीं पिलानी"। गुरुदेव हमारे लिए तो महागुरु थे पर माताजी के लिए तो अक्सर अच्छी खासी परेशानी खड़ी कर देते थे।

मुझे लगता है कि वे माता जी का मन बहलाकर उनकी नींद के नुकसान की भरपाई करते थे। लेकिन माताजी बड़े सहज स्वभाव की थीं। हालांकि वे एकाध बार शिकायत भी करती थीं, लेकिन वो गुरुदेव और हमारी जरूरतों का पूरा ध्यान रखती थीं!

मैं मानता हूं कि गुरुदेव सौभाग्यशाली थे कि उन्हें माताजी जैसी पत्नी मिलीं - मेहनती, निश्छल और उनके चुटकुलों पर हंसने वालीं...

मैं माताजी के भाई और गुरुदेव के बहनोई रूद्र साहब से मिलने लुधियाना पहुंचा, जहां हमारे बीच बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई।

सवाल : तो जब पहली दफा आपने देखा तो सबसे पहली प्रतिक्रिया क्या थी? फिजिकल ही होगी?

रूद्र जी : फिजिकल के अलावा, शक्ल तो देखने में कोई इतनी बुरी नहीं थी। यह तो एक नजर में पता लग जाता है। बातें करने का मकसद यह होता है कि मैं यह समझ सकूं कि इनकी सोच

कैसी है, कैसे बात करते हैं और उनकी जिंदगी का, उनके चरित्र, उनकी तबीयत और सोच का थोड़ा-सा अंदाजा हो जाता है। मैंने फिर एक बड़ी लंबी चिट्ठी लिखी। उन दिनों में टेलीफोन नहीं होते थे। तो मैंने चिट्ठी लिखकर बताया कि लड़का बहुत अच्छा है। बोलचाल में भी बहुत अच्छा है और उनके जो मेरे अपने इम्प्रेशन थे।

सवाल : क्या थे आपके इम्प्रेशन्स?

रूद्र जी : मेरे इंप्रेशन्स यह थे कि लड़का योग्य है।

सवाल : जब आप लड़के (गुरुदेव) को देखने गए, तो उनको पता था कि आप उनको देखने आ रहे हैं?

रूद्र जी : हां उनको बताया था मैंने।

सवाल : गुरुदेव ने पहले माताजी को देखा हुआ था या शादी के वक्त ही देखा?

रूद्र जी : शादी के वक्त। उन्होंने पहले नहीं देखा था।

सवाल : आपका मतलब है बिना देखे ही शादी हुई?

रूद्र जी : हां उन दिनों में यदि लड़का यह कहे कि वो शादी से पहले लड़की से मिलना चाहता है, तो इसे अच्छा आचरण या तमीज़ नहीं मानी जाती थी। यह कोई पसंद नहीं करता था।

सवाल : आपकी बहन जो थीं, उनका स्वभाव कैसा था? सीधी सादी थीं या थोड़ी तेज थीं?

रूद्र जी : नहीं, तेज नहीं थी। वह सीधी-सादी थीं।

सवाल : कोई नटखटपन?

रूद्र जी : नहीं नटखटपन नहीं था, इनमें सीधापन था। और पढ़ने में भी बहुत तेज नहीं थीं। वो एक औसत छात्रा थीं।

सवाल : आपका परिवार कितना बड़ा था?

रूद्र जी : हमारे परिवार में मेरी चार बहनें और चार भाई थे।

रूद्र जी को आप बहुत ही सरल और स्पष्टवादी कह सकते हैं।

आइए इस पारिवारिक ज़ायके को जारी रखते हुए भाई से बहन की तरफ रुख़ करते हैं

हालांकि गुरुदेव दिखने में बड़े आकर्षक पति थे, लेकिन उन्होंने अपनी पत्नी को कई तरह से चौंकाया। सबसे पहली बार तो तब, जब उनकी शादी के कुछ हफ्तों बाद गुरुदेव बिस्तर पर लेटे हुए गहरी ध्यान मुद्रा में चले गए। माता जी घबरा गईं क्योंकि गुरुदेव की सांसें चलती नजर नहीं आ रही थीं। उन्होंने सोचा कहीं कुछ अनर्थ तो नहीं हो गया! वो भागकर अपनी ननद के पास गईं, जिन्होंने माता जी को बताया कि गुरुदेव असल में ध्यान की मुद्रा में हैं और इसलिए फिक्र की कोई बात नहीं है।

सवाल : जब आपकी शादी हुई तो क्या आपको पता था कि जिस इंसान के साथ आपकी शादी होने वाली है, वो एक आध्यात्मिक इंसान हैं?

माता जी : मुझे कुछ नहीं पता था। शादी के एक महीने बाद वो ध्यान में लेटे हुए थे। मुझे ध्यान के बारे में भी कुछ नहीं पता था। मैं उन्हें कुछ काम के लिए बुलाने गई थी। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे लगा जैसे वो सांस नहीं ले रहे थे। मैंने उनके पांव हिलाए, उनके शरीर को हिलाया। लेकिन वो नहीं हिले। मैं घबरा गई और मैंने सोचा पता नहीं क्या हुआ है। मैं अपनी ननंद के पास पहुंची कि देखो इनको क्या हो गया है। उन्होंने बताया कि वह कोई नई बात नहीं है। और चिंता की कोई बात नहीं, वो ऐसे ही पाठ करते हैं। तो मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं था।

बाद में धीरे-धीरे मुझे पता चला कि वहां वो झरने या पानी के स्रोत के किनारे बैठ जाते थे। किनारे पर नहाने के लिए पट्टी जैसा बनाते हैं, उसको बोड़िया कहते हैं, वहीं बैठते थे। वो पेड़ के नीचे बैठकर काफी भक्ति करते थे। सारा दिन बैठे रहते थे और घर में भी आकर शाम को भक्ति करते थे। शादी से पहले उन्होंने बहुत तपस्या की और बहुत भक्ति की। वो किसी के हाथ का बना नहीं खाते थे। खुद अपना खाना बनाते थे। किसी से थोड़ी सब्जी ले ली या थोड़ा गुड़ और उसके साथ रोटी खा लेते थे। वो खुद अपने हाथ से रोटी बनाते थे।

सवाल : अपने ही घर में?

माता जी : अपने ही घर में। अक्सर लंगोटी में ही घूमते थे। वो उसी लंगोटी में रहते थे और शादी के पहले इसी तरह तपस्या करते थे। घूमते-घूमते कई साधु संतों के पास गए और उनसे अपने विचार बताए और इस तरह धीरे-धीरे इन्होंने अपनी तपस्या बढ़ाई।

जब शादी हुई तो माताजी ने सोचा होगा कि उनकी शादी एक साधारण, आकर्षक व्यक्ति से हुई है। लेकिन जैसे ज़िंदगी आगे बढ़ी तो उन्हें एहसास हुआ कि उनकी डोर एक महान हस्ती के साथ बंध गई है। माताजी कोई गायिका नहीं थीं, लेकिन अगर होतीं तो शायद ये भूला बिसरा गीत गुनगुनातीं, “तुझे जीवन की डोर से बांध लिया है, तेरे ज़ुल्म-ओ-सितम सर आंखों पर।” गुरुदेव अगर इसका जवाब देते तो शायद ये कहते “मैंने बदले में प्यार के प्यार दिया है, तेरी खुशियाँ और ग़म सर आँखों पर”.

सवाल : गुरुदेव ने आपको कभी किसी किस्म की भक्ति समझाई कि आप ऐसे करें या वैसे करें?

माता जी : नहीं, उन्होंने मुझसे कभी भक्ति करने को नहीं कहा। मेरे अपने मन की चलती रही है (हंसते हुए)।

पीछे से किसी की आवाज आती है - क्या उन्होंने आपको कोई पाठ वगैरह करने का मशवरा दिया था?

माता जी : नहीं, मैं पाठ अपने आप ही करती रही हूं। उन्होंने कभी कुछ नहीं बोला। फिर करते-करते मैंने पाठ किए और मंत्र किए और फिर मैंने गायत्री मंत्र का पाठ करना शुरू कर दिया।

मैंने उनसे कहा कि गायत्री मंत्र का पाठ करके मुझे बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने कहा, "तुम्हें कैसे अच्छा नहीं लगेगा, जब मैं खुद इस मंत्र का उपासक हूं तो तुम्हें तो अच्छा लगना ही है।" फिर भी उन्होंने मुझे कोई निर्देश नहीं दिया। मैं गायत्री मंत्र करती रही। फिर बहुत लंबे समय बाद उन्होंने कहा कि आओ मैं तुम्हें महा गायत्री मंत्र देता हूं। उसके बाद मैंने महा गायत्री मंत्र शुरू कर दिया। फिर भी वो तो मुझसे कहते थे कि तुम्हें इसकी जरूरत ही नहीं है (हंसते हुए)। वो कहते थे, "मैं जो भी करूंगा उसका आधा तुझे मिलेगा। तो तुम्हें जरूरत क्या है पाठ करने की। तुम मुझसे ज्यादा शक्तिशाली बन जाओगी।" वह कहते थे, "तुम्हें जरूरत क्या है यह करने की, जब मैं कर रहा हूं?"

उन्होंने माता जी को गायत्री मंत्र देने के बाद उनसे मजाक करते हुए कहा, “मास्टर मैं जो भी मंत्र करदा हां, उस दा आधा लाभ तू लै जांदी है। तेह तेरा पूरा तेन्हु मिलदा हां। ता मेल-जोल करके तेन्हु देढ़ा मिलदा है। ये कित्थों दा इंसाफ है।”

क्या आपको लगता है कि उनके घर पर कोई स्पर्धा हो रही थी? हा हा, मुझे ऐसा नहीं लगता! असल में इस तरह के मज़ाकिया अंदाज़ ने ही उन्हें एक दिलचस्प पति बनाया।

सवाल : कुछ सालों के बाद जब यह सब शुरू हुआ और लोग आने लगे, शिष्य वगैरह तो आपको इनके अंदर कोई आध्यात्मिक चीज़ नजर आई? आपको क्या नजर आया है इनके अंदर? आपके तो पति थे ना, एक पति के अंदर कोई आध्यात्मिक चीज़ देखना आसान काम तो है, जैसे एक रानी को अपने पति में एक राजा ही तो नजर नहीं आता?

माता जी : बेटा वो मुझसे कहते थे, "मास्टर देखना, जब मैं 35 साल का हो जाऊंगा तो क्या बनूंगा।"

सवाल : ये बताइए?

माता जी : मैं सोचती थी कि काम पर वेतन में बढ़ोतरी होगी या उनका प्रमोशन हो जाएगा (हंसते हुए)। उस समय तो मैं सोच ही नहीं सकती थी कि वो गुरु बनेंगे।

सवाल : जी।

गुरुदेव जब 5 या 6 वर्ष के रहे होंगे, तब हरिआना में उनके घर पर महात्माओं की एक टोली पधारी थी, जिन्होंने यह भविष्यवाणी की थी कि नन्हें गुरुदेव पैंतीस साल की उम्र में बड़े मशहूर होंगे और दुनिया उन्हें शिव के स्वरूप की तरह जानेगी। ज़ाहिर है माता जी को इस भविष्यवाणी का कोई इल्म नहीं था।

मैं यकीन से नहीं कह सकता कि यह गुरुदेव का स्वभाव था या अपनी शक्तियों और क्षमताओं के बारे में ज्यादा कुछ ना बताने की आध्यात्मिक नीति थी। सबकी निगाह में वे तो अपने आप को एक साधारण मनुष्य की तरह ही प्रस्तुत करते थे. उन्हें बेहतर ढंग से जानने के लिए या तो आपको उन पर कड़ी नज़र रखनी होगी या फिर, आप में उनके तिलिस्म को पहचानने का सामर्थ्य होना चाहिए.

गुरुदेव अपनी वास्तविकता केवल उन्हें ही प्रदर्शित करते जिन्हें वे स्वयं चुनते थे। वो एक सार्वजनिक शख्सियत होने में यकीन नहीं रखते थे और प्रचार-प्रसार से दूर रहते थे।

मुझे लगता है कि गुरुदेव उन लोगों की जिंदगियों को छूना चाहते थे, जिनको उन्हें प्रेरित करना था। इसलिए उन्होंने बाकी लोगों को अपनी असली प्रकृति से अनजान रखा।

माताजी हमें और भी कुछ बताती हैं।

सवाल : कहते हैं कि वे बहुत घंटे पूजा-पाठ करते रहते थे। कोई अनुभव होते थे जो ये आप से बताते थे? आपको बताते थे कि आज मुझे यह नजर आया या यह हुआ है?

माताजी : नहीं उन्होंने मुझे कुछ नहीं कहा। हां कभी जब मूड में आए तो मुझसे बोलते थे, लेकिन अपने रोज के अनुभव के बारे में कुछ नहीं बताते थे।

सवाल : जब मूड में होते थे, तो क्या इन्होंने कभी बताया आपको कुछ। उन्होंने देवी देवताओं का वर्णन किया कि मैंने यह देखा है या मेरे साथ ऐसा हुआ?

माताजी : नहीं, ऐसा कभी नहीं कहा।

सवाल : तो उन्होंने आपसे कभी कुछ नहीं कहा? तो आप उनसे पूछती नहीं थीं कि आप रोज यह सब करते रहते हैं तो आपको इस पाठ से क्या फायदा हो रहा है? आपने कभी नहीं सोचा कि यह करते क्यों हैं?

माताजी : नहीं, बल्कि मैं तो हमेशा यह कहती थी कि भगवान का नाम लेकर पूजा करते हैं और पूजा करना तो अच्छी बात है।

सवाल : मगर सारा दिन, सारी रात?

माताजी : सारा दिन, सारी रात नहीं करते थे। वो दूसरे काम भी करते थे। शरारत भी करते थे, ऑफिस भी जाते थे। बाकी सबकुछ करते थे।

पीछे से किसी की आवाज आती है - वो तो एक साधारण आदमी की तरह थे।

माताजी : सामान्य लोगों की तरह ही करते थे।

सवाल : एक पति होने के नाते क्या आपको कहीं बाहर घुमाने ले जाते थे?

माताजी : ले जाते थे।

सवाल : कहां?

माताजी : बहुत-सी जगह ले जाते थे (हंसते हुए)। हम बहुत-सी जगह गए। पिक्चर भी देखने गए हैं। बहुत-सी दूसरी जगह पर भी गए हैं। स्कूटर पर भी सवारी की है (हंसते हुए)। गाड़ी में भी साथ बैठकर गए। रात में भी पिक्चर देखने गए हैं दिन में भी गए हैं। आम लोगों की तरह ही रहते थे वो।

सवाल : तो एक पति के रूप में क्या वे आपको हंसाया करते थे या सीरियस थे? उनका नेचर कैसा था।

माताजी : नेचर बहुत अच्छा था। हंसाते भी थे, खूब हंसाते थे। खुश भी रहते थे। और किसी टाइम जानबूझकर कोई प्रॉब्लम भी कर लेते थे। वो कहते थे कि वो भी जरूरी है, मिर्च मसाला भी होना जरूरी है। हम लोग झगड़ा भी करते थे।

हमने गुरुदेव की सबसे छोटी बेटी अल्का से बात की, जिन्हें प्यार से छुटकी बुलाया जाता है।

सवाल : तो आप कहती थीं कि गुरुदेव आपके साथ बैठते थे और वो स्कूल की बातें और हंसी-मजाक करते थे। उनके सारे शिष्य कहते हैं कि वो बहुत मजाक किया करते थे। क्या वो आप बच्चों के साथ भी हंसी-मजाक करते थे?

अल्का जी : हां बिल्कुल। असल में बुआ जी लोग के साथ भी वो बहुत जोक मारते थे, मजाक करते थे। जब मम्मी और डैडी विदेश यात्रा से लौटे थे, तो उन्होंने 2 घंटे तक उस यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने अपने अनुभव के बारे में बताया और वहां किन लोगों से मिले और उनकी संस्कृति के बारे में बताया और हमें हंसाया। तो मम्मा को यह कहना पड़ता था, "अभी बस भी करो, कितना हंसाओगे, क्या कर रहे हो।" लेकिन हमें बहुत हंसाया डैडी ने।

अक्सर लोग कड़ी निगरानी में बौखला जाते हैं। लेकिन गुरुदेव पर तो ब्रह्मांड की दूरबीन टिकी हुई थी। उन्हें हरदम सचेत रहना पड़ता था।

उनकी बेटी रेणु के अल्फ़ाज़ों में उनके ज़िक्र पर गौर फरमाएं,

रेणु जी : हम एक सामान्य परिवार से थे और हमारे दोनों पेरेंट्स जॉब करते थे। साधारण स्कूल में गए। गुरु जी की टूरिंग जॉब्स थी तो मम्मी अकेले होती थीं हैंडल करने वाली। शिवपुरी में, जहां हम रहते थे, वहां जंगल जैसा था। खाली एरिया था। दिल्ली से हम लोग शिवपुरी आए थे। डैडी सर्दियों में ज्यादा रहते थे, तो हमें डैडी का बहुत कम टाइम मिलता था। तो हम मम्मी के साथ ही बात कर पाते थे। डैडी के साथ तो बहुत कम टाइम रहता था, उसमें भी जॉब पर गए और यहां-वहां यात्राएं कीं। तो इस तरह का नार्मल रहता था। डैडी की छवि बचपन में मेरे लिए ऐसी थी कि जो मम्मी की बात नहीं मानेगा, तो डैडी तक बात पहुंच जाएगी। तो एक डर था कि डैडी तक बात पहुंच जाएगी तो डैडी को यह पसंद नहीं है। जब हम बाद में चीजों को समझने

लगे, तो मैंने डैडी को समझा कि बहुत ही साधारण और नॉर्मल व्यक्ति थे। वो अपनी किसी भी चीज में फिक्स नहीं रहते थे। बाद में मुझे महसूस हुआ कि डैडी मम्मी से ज्यादा खुले विचारों के थे।

सवाल : मतलब?

रेणु जी : वो यह नहीं मानते थे कि यह चीज़ है और इसे ऐसे ही करना चाहिए। वो ऐसे नहीं थे जिस तरह से नॉर्मल बच्चों की तरह मैं भी उन्हें समझती थी। हालांकि मुझे इसे समझने में समय लगा। बहुत बाद में जब मैं कॉलेज में थी, तो मैं सोचती थी कि उनसे कैसे बात की जाए या उनके साथ कैसे खुला जाए। तो एक बार मैंने उनसे कहा, "आपसे तो हम कुछ कह नहीं सकते।" उन दिनों में उनके पास भी वक्त नहीं होता था। हम उनसे बहुत कम ही मिल पाते थे। कभी-कभी तो हम उनसे 10-15 दिनों तक नहीं मिलते थे, क्योंकि उनसे मिलने वालों की बहुत भीड़ रहती थी।

सवाल : उसी घर में रहते हुए कई बार आप 10-15 दिन नहीं मिलते थे?

रेणु जी : हां, कई बार नहीं, 10-15 दिन तो निकल ही जाते थे और कई बार महीना भी हो जाता था। मैं समझती थी कि हमारी लाइफ नॉर्मल नहीं है। हमारी जिंदगी दूसरे बच्चों से बहुत अलग थी जो हर रोज सपने पिताओं से बात कर पाते थे। हालांकि हमारे मामले में हमें नहीं पता होता था कि सुबह मिलेंगे या नहीं या ऑफिस चले जाएंगे। वो सुबह जल्दी चले जाते थे क्योंकि घर पर बहुत भीड़ हो जाती थी जबकि हम बाद में सोकर उठते थे। तो मैंने उनसे यह चीज कह दी। मैं बहुत कम बोलती थी, तो मैंने कुछ शब्दों में बोल दिया। मैंने बड़ी हिम्मत करके कह दिया कि आपके पास हमारे लिए कहां वक्त है। हमारे लिए तो जो कुछ भी हैं, मम्मी ही हैं। मैं तो ऐसा सोचने लगी थी कि यदि हमारी जिंदगी में मम्मी ना हो तो हमारे पास तो कहने के लिए कोई जिंदगी ही नहीं थी। तो मैंने उनसे बोल दिया, "आपके पास तो हमारे लिए टाइम नहीं है।" जब उन्होंने ये सुना तो कुछ मिनट तो कुछ नहीं कहा। मुझे लगा डांट पड़ेगी। हालांकि वो कुछ देर के लिए रुके और कहा, "बेटा, मुझे तुम्हारी मां की तरह प्यार दिखाना नहीं आता। शायद तुम कभी समझ पाओगी। जब समझोगे, तब तुम्हें पता चलेगा कि मैं प्यार या पुचकार भरे शब्दों से अपना प्यार नहीं जताता। जब समझ आएगी तुम्हें, तो पता चलेगा कि प्यार होता क्या है।"

लोगों का भी बहुत आना-जाना होता था लेकिन हमारे लिए इससे कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता था। क्योंकि कुछ चीजों की हमें शायद समझ ही नहीं थी। उनके बारे में हमें कुछ ही चीज है पता थी जैसे डैडी जल बनाते हैं, लोगों को ठीक कर देते हैं और कुछ सोचो तो उन्हें वह भी पता चल जाता था।

सवाल : अच्छा यह भी पता था आपको?

रेणु जी : छोटी छोटी बातें थीं। जैसे हमें पता था कि डैडी पाठ कर रहे हैं तो हमें भी पाठ करना होता था। महा गायत्री मंत्र का तो मुझे पता नहीं था। लेकिन मुझे याद है सोने से पहले हम गायत्री मंत्र का पाठ करते थे, जैसा कि किसी भी परिवार में होता था। ऐसा कुछ नहीं था कि घर में रामायण हो रही है या कुछ ऐसा करना होता था।

सवाल : उनका प्यार करने का तरीका कैसा था?

रेणु जी : बस यही बोलते थे, "अच्छा तुम्हें घूमने के लिए कहां जाना है?" हालांकि वो भी सिर्फ एक बात ही होती थी हमें खुश करने के लिए, क्योंकि उनके पास समय तो होता नहीं था। तो हमारे पास गर्मियों की छुट्टियां होती थीं तो वह कहते थे "अच्छा अब जहां बोलोगे, वहां तुमको घुमाने ले चलूंगा।" तो कई बार प्रोग्राम बनता था, या नहीं बनता था, लेकिन मुझे पता होता था कि जब भी वो अच्छे मूड में होते थे तो एक यही चीज होती थी कि घूमने कहां जाना था। लेकिन यह जो आपने पूछा कि प्यार किस तरह का होता था? शायद इस चीज को उनके बाद बहुत महसूस करती हूं। लेकिन अब मैं सोचती हूं कि यदि वो ना होते तो मुझे यह समझ नहीं आता कि गुरु कृपा क्या होती है। गुरु कैसे आप को समझाते हैं और गुरु का दायरा कितना बड़ा होता है, यह कभी नहीं समझ पाती।

गुरुदेव की भूमिकाएं निभाना बड़ा दुश्वार काम था। एक पारिवारिक आदमी के रूप में उनके समीकरण कुछ इस तरह से थे - ऑफिस, सेवा, अलौकिक यात्रा और शिष्य... यानी कुल मिलाकर परिवार के लिए कोई समय नहीं बचता था।

उनके बच्चे उनसे बहुत कम मिल पाते थे। हालांकि गुरुदेव उनसे छुट्टियों के बारे में बात करते समय अपना सर्वश्रेष्ठ अभिनय करते थे, लेकिन वो इसमें हमेशा कामयाब नहीं होते थे। उनकी

सबसे बड़ी बेटी होने के नाते रेणु स्वाभाविक रूप से अपने छोटे भाई-बहनों से ज्यादा अधिकार भाव महसूस करती थीं। इतने सारे कार्यों को एक सूत्र में एक साथ पिरोना कोई साधारण काम नहीं था। हमसे पूछो!

तो आप में से बहुत-से ऐसे लोग, जो खुद को जाहिर और प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं, उनके लिए यह एक सबक है, जिससे आप अपने रोबोटिक व्यवहार को उचित ठहरा सकते हैं। भावनात्मक रूप से सबसे कटे रहने वाले लोग विचारों में तो उन्नत होते हैं, लेकिन उनके बारे में अक्सर लोग गलतफहमियों का शिकार हो जाते हैं।

गुरुदेव के छोटे बेटे नीटू, जिन्हें गुरुदेव के पिता का पुनर्जन्म माना जाता है, अपने पिता के बारे में कुछ और बताते हैं।

नीटू जी : हां पढ़ाई के लिए भी पूछते थे। कई बार तो ऐसा होता था कि जब हम परीक्षा देकर आते थे तो डैडी हमसे क्वेश्चन पेपर लेते थे और हमसे पूछते थे कि इसका आंसर बताओ। डैडी मुझे हमेशा पंडित जी बोलते थे। तो वह मुझसे पूछते थे, "पंडित जी क्या आंसर लिखा है इसका।" तो मुझे उसका आंसर देना होता था।

जब हमसा ने नीटू से जानना चाहा कि गुरुदेव उन्हें कैसे पढ़ाते थे, तो उन्होंने कुछ दिलचस्प बातें बताईं,

नीटू जी : डैडी का ऐसा कुछ नहीं था कि वो कोई सब्जेक्ट पढ़ाते थे। आ गया तो इंग्लिश का पेपर आ गया। पेपर में कुछ भी पूछ लेते थे, "पंडित जी इसमें क्या लिखा है?" मैंने बताया यह लिखा है। तो कहते थे, "नहीं, नहीं पंडित जी, यह गलत आंसर है, गलत लिख दिया आपने, तो इस सवाल को तो काटा मार दो।" हम बहुत छोटे थे और उस समय हमें लेफ्ट राइट कभी मालूम नहीं होता था कि लेफ्ट क्या है और राइट क्या है (हंसते हुए)। तो डैडी ने आकर पूछा, "पंडित जी ऐसा है कि अगर हम साइकिल चला रहे हैं या बाइक चला रहे हैं तो हमें लेफ्ट साइड में चलाना है, तो बताओ तुम्हारा लेफ्ट साइड कौन-सा है।" तो मैंने अपना सीधा हाथ उठाया। तो उन्होंने कहा, "पंडित जी ये तुम्हारा लेफ्ट साइड है?" मैंने कहा मेरा तो लेफ्ट साइड ही है यह। तो वो बहुत हंसे और कहा, "पंडित जी, एक बात हमेशा ध्यान रखना कि जो कड़ा आप पहनते हैं, वो हमेशा आपके राइट हैंड में होता है।" तो ये बातें उन्होंने बताई मुझे।

एक बार हम गुरु जी के साथ हिमाचल प्रदेश के टूर पर गए थे। गुरुजी कैंप में अपने रूम में बैठे हुए थे और हम सब बच्चे रोड पर खेल रहे थे। तभी गधों का एक झुंड वहां से गुजरा और उनको रास्ता देने के लिए मैं बाजू में खड़ा हो गया। हिमाचल में एक बड़ा आम पौधा है, जिसे बिच्छू बूटी कहते हैं। उसकी जड़ मेरी उंगली को छू गई। उस समय मुझे पता नहीं चला कि मुझे किस चीज ने छुआ है। यह दर्द इतना ज्यादा था कि मैं जितना उस जगह को रगड़ता था वह उतना ही फैलता जाता था। मैं दर्द से कराह रहा था और मेरा हाथ लाल हो गया था। मेरे दोस्तों ने मुझसे पूछा, "क्या हुआ?" मुझे नहीं पता था कि असल में क्या हुआ, मच्छर ने काटा या फिर कुछ और हुआ है। मेरे दोस्त मुझे गुरुजी के पास ले गए। मैं उनके सामने खड़े होकर रोने लगा। उन्होंने मुझसे पूछा, "पंडित जी क्या हुआ?" मैंने जवाब दिया, "पता नहीं। मेरा हाथ बहुत दुख रहा है।" उन्होंने मुझसे हाथ दिखाने को कहा। हाथ लाल हो गया था। लेकिन वह बड़े शांत थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि ये कैसे हुआ? मैं दर्द में तड़प रहा था और सोच रहा था कि डैडी ऐसे बेकार के सवाल क्यों पूछ रहे हैं। मैं यहां दर्द में मर रहा हूं! लेकिन फिर मुझे उन्हें बताना पड़ा। जब मैंने उन्हें बताया तो उन्होंने कहा, "चलो उस जगह पर चलते हैं, जहां यह हुआ।" मैं लगातार रो रहा था मैंने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें उस जगह पर ले गया। मैं यह सोच रहा था कि मेरा दर्द दूर करने के बजाय वो मुझे फिर से उसी जगह पर ले जा रहे हैं। उन्होंने मुझे वो जगह दिखाने को कहा जहां यह हुआ था। तो मैंने वो जगह दिखाई। उन्होंने कहा, "तुम्हें बिच्छू बूटी चुभी है और इसका इलाज ठीक इसके नीचे, इसकी जड़ों में ही है। उन्होंने उसे मेरे हाथ पर रगड़ा और सिर्फ 2-3 सेकंड में मुझे तुरंत आराम मिल गया। आप कह सकते हैं कि उन्होंने गुरु के रूप में हमें यह बातें सिखाई थीं। उन्होंने मुझसे कहा, "बेटा, प्रकृति के पास हर चीज का इलाज है, आपको सिर्फ पता होना चाहिए कि उसे कहां ढूंढना है।" तो उन्होंने मुझसे यह कहा था।

छुटकी यानी अल्का हमारे अगले सवाल का जवाब देती हैं,

सवाल : आप तीन बहन और दो भाई थे, तो क्या आपने अपने परिवार में लड़के और लड़की में फर्क करते देखा जैसा कि अक्सर आम पंजाबी परिवारों में होता है?

अल्का जी : नहीं, ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। बाकी फैमिली मेंबर्स में यह जरूर होता था कि लड़की पैदा हो गई, पहली हो गई, दूसरी हो गई। बाबा भैया मेरे से बड़े हैं लेकिन हमारे पेरेंट्स

ने कभी हमारे बीच फर्क नहीं किया। यदि आप एक तरह से देखें तो डैडी ने रेणु दीदी को सबसे ज्यादा प्यार दिया, क्योंकि वो फैमिली में सबसे बड़ी बेटी थीं। वो रेणु दीदी को बहुत रिस्पेक्ट भी देते थे। तो ऐसे उन्होंने कभी हमारे बीच कोई फर्क नहीं किया।

गुरुदेव नारीत्व का बहुत सम्मान करते थे। वे मानते थे और यह समझाते भी थे कि नारियां शक्ति का रूप होती हैं और शक्ति ब्रह्मांड की रचनाकार है। मेरे बहुत-से गुरु भाई यह शिकायत करेंगे और इस बात की गवाही देंगे कि गुरुदेव ने हमेशा हमारी पत्नियों का पक्ष लिया। तो इस प्रकार से यहां उन्होंने हमारे साथ थोड़ा भेदभाव तो किया। अगर हमारे हंसले बुलंद है तो हम उनके सम्मे लाल झंडा ले कर ज़रूर कहते 'इन्कलाब जिंदाबाद!' लेकिन बादशाओ, आखिर इसे सुनने वाला कौन था?

एक साथ दो नावों पर सवारी करना आसान नहीं होता।

परिवार की जरूरत होती है कि आप उसमें शामिल रहें, और बच्चे तो आमतौर पर एक अधिकार का भाव रखते हैं। हालांकि गुरुदेव के बच्चों को यह सच स्वीकार करना पड़ा कि उन्हें अपने पिता को लाखों लोगों के साथ बांटना होगा। हालांकि गुरुदेव ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया, लेकिन उनके वो प्रयास अक्सर वक्त की पाबंदियों से घिरे रहते थे। दूसरी मुश्किल यह थी कि वे एक मिशन पर थे। उनका मिशन था कि वे अपने सैकड़ों अनुयायियों को आगे बढ़ाएं जो उन्हें एक पिता की तरह देखते थे। एक विभाजित पिता? क्या बात है! ये रिश्ता निभाना आसान नहीं!

गुरुदेव के छोटे बेटे नीटू बड़े राजनयिक इंसान हैं और अगले कुछ शब्दों में वो अपना ये हुनर बखूबी पेश करते हैं।

सवाल : एक पिता के रूप में गुरुदेव कैसे थे?

नीटू जी : बहुत से लोग बोलते हैं कि आपका समय लेकर गुरुजी ने हमें समय दिया। मुझे तो कहीं पर ऐसा महसूस नहीं हुआ कि डैडी ने मेरा टाइम लेकर किसी और को टाइम दिया। अगर मैं नीचे भी आया तो वो कभी ऐसा नहीं कहते थे कि बाहर जाओ। वो कभी हमें ऐसा महसूस नहीं कराते थे कि वो किसी के साथ कुछ बहुत जरूरी बात कर रहे हैं। कभी नहीं। हम उनकी बातचीत के दौरान वहां खड़े रहते थे। हमें ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ कि वो हमें अटैंड नहीं

कर रहे हैं। वो लोगों के बीच हमको अटैंड करते थे। कभी हमसे पूछते भी थे, “पंडित जी, स्कूल कैसा चल रहा है? पढ़ाई कैसी चल रही है?” और ऊपर आकर हमारे साथ पूरा समय भी देते थे। हमारी गर्मी की छुट्टियां होती थीं तो हमें पता होता था कि डैडी के साथ एक महीने के लिए घूमने के लिए जाना है। वो पूरी तैयारी करते थे। बच्चे टूर पर बोर नहीं होने चाहिए, इसलिए उसका सारा अरेंजमेंट करते थे। वो करीब 50-100 वीडियो कैसेट्स लेकर जाते थे क्योंकि हिमांचल में रात के टाइम कोई एक्टिविटी नहीं होती थी। तो हम लोग रात के समय मूवीज़ देखते थे।

अल्का जी की यादें आपके सामने पेश-ए-खिदमत

सवाल : अल्का जी होश संभालने के बाद आपकी गुरुदेव के बारे में पहली याद क्या है?

अल्का जी : एक पिता के रूप में?

सवाल : हां, एक पिता के रूप में उनकी कुछ खास यादें क्या है?

अल्का जी : यह तो है कि हम रोज नहीं मिलते थे, लेकिन उनकी जो यादें हैं जैसे वो ट्रिप पर जाते थे तो लौकर अपना अनुभव बताते थे और हमारे साथ वक्त बिताते थे। उनका यह था कि वो किसी भी बड़ी बात को बहुत ही शॉर्ट में 1-2 वाक्यों में बड़े अच्छे से समझा देते थे। जब हमें टूर पर ले जाते थे तब की भी यादें हैं। तो एक पिता के रूप में हमारे पास उनकी वो यादें हैं। मुझे याद है एक बार हम सभी नेपाल की यात्रा पर गए थे। यह शायद 1982 की बात है। तो रेणु दीदी ने बोला होगा कि इतना छोटा ट्रिप था, हमें इतना चलाते थे। तो ट्रिप पर जाने के पहले तो उन्होंने कुछ नहीं बोला लेकिन जब हम वापस आए तो मुझे याद है रेणु दीदी ने शिकायत की थी, “क्या घुमाया आपने? आपने कहा था आगरा लेकर जाएंगे, ताजमहल दिखाओगे, लेकिन आप हमें कहीं लेकर नहीं गए?” तो गुरुजी ने बोला, “लेकर तो गया था तुमको आगरा।” रेणु दीदी ने पूछा, “कब लेकर गए?” उन्होंने कहा, “वहीं से हमने आगरा क्रॉस तो किया था दिल्ली से आते वक्त।” (हंसती हैं) तो हंसी-मजाक भी चल रहा है, लेकिन दीदी को एकदम गुस्सा आ गया।

स्कूल पढ़ने वाले बच्चों को यह समझाना आसान नहीं है कि प्यार हदों के नियम नहीं जानता। क्योंकि प्यार एक जज़्बात नहीं, बल्कि एक एहसास है। यह किसी एक का नहीं है और इसे समेटा भी नहीं जा सकता। इसे तो खुशबू की तरह फैलना होता है, जो सिर्फ चुनिंदा लोगों को नहीं बल्कि सभी को अपने आंचल में समा लेता है।

गुरुदेव के बच्चों में वक्त के साथ यह समझ भी आ गई.

अल्का जी : तो रेणु दीदी गुरुजी से कहती थी कि उन्हें ड्राइंग रूम चाहिए और ऊपर डाइनिंग रूम चाहिए क्योंकि हम बड़े हो रहे थे और हमें पढ़ने के लिए जगह चाहिए थी। इस पर डैडी कहते थे, "क्या फर्क पड़ता है। हमारे पास जितने कमरे हैं, उतने तुम सभी के पढ़ने के लिए काफी हैं।" लेकिन दीदी नहीं सुनती थी। हमारे पास सिर्फ दो ही कमरे थे। इसके बाद डैडी ने पहले और दूसरे फ्लोर पर कंस्ट्रक्शन शुरू की जहां उन्होंने एक ड्राइंग रूम बनवाया। हम उनके साथ खड़े थे और वो ड्राइंग रूम का साइज़ देखने के बाद बोले, "यह बिल्कुल परफेक्ट साइज़ है। इस कमरे में एक बार में 20 से 25 लोग रात में आराम से सो सकते हैं।" यह सुनकर रेणु दीदी गुस्सा हो गईं क्योंकि उन्हें लगा था कि गुरुजी ने यह ड्राइंग रूम हम लोगों के लिए बनवाया है जबकि गुरुजी ने लोगों के लिए यह कमरा बनाया था। बाद में दीदी समझ गईं कि गुरु जी को लोगों के लिए भी सोचना है और जब कोई चीज किसी खास उद्देश्य के लिए बनाई गई हो तो उसे उसी के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। हमारे डैडी ने यह भी बोला, "बेटा हम तो फकीर बन गए हैं। हमें इन सोफा और बेड से क्या लेना?" इसके बाद रेणु दीदी ने ज्यादा बहस नहीं की। लेकिन हां रेणु दीदी ने कहा तो वो चीज हुई। कभी-कभी वो हमारी तरफ से भी लड़ती थीं। वो डैडी से कहती थीं, "आपको हमें ट्रिप पर ले जाना चाहिए। आपको तो अपने बच्चों के नाम भी नहीं पता होंगे!" तो डैडी बड़े मजाकिया अंदाज में कहते, "तुमको क्या लगता है, मुझे अपने बच्चों के नाम नहीं पता? मैं बताता हूं।" अब मुझे पता नहीं कि डैडी हमारे नाम ग्राउंड फ्लोर पर किसी से सीखकर आए थे, लेकिन उन्होंने हमारे नाम बिल्कुल सही बताए। तब दीदी ने कहा ठीक है। (हंसते हुए)

अपने बच्चों के नाम भूल जाना यकीनन शर्मिंदगी का सबब है। लेकिन महागुरु तो अपने शरीर से परे थे और अपनी शारीरिक वास्तविकता से रूबरू होना उनके लिए कभी-कभी एक चुनौती बन जाती थी।

जो व्यक्ति उन्हें अक्सर इन उलझनों से बाहर निकालता था, वो थीं माता जी, जो गुरुदेव की नैया की पतवार थीं। उमा प्रभु, माता जी के लिए कुछ इस तरह श्रद्धा जताती हैं।

उमा जी : गुरुदेव से ज्यादा माताजी ने काफी मुश्किल जिंदगी जी होगी क्योंकि वे बहुत प्रेरित रहती थीं। और यही वजह है कि उनकी मौन सादगी और उनकी मौन आध्यात्मिकता गुरुदेव की आध्यात्मिकता का बहुत बड़ा सहारा थी। इसीलिए उनके मामले में शिव और शक्ति बिल्कुल सटीक है।

सवाल : जी बिल्कुल। वो खामोश रहती थीं ...

उमा जी : उनकी खामोशी, उनकी दृढ़ता, उनकी सादगी और उनकी आध्यात्मिकता उनसे झलकती थी। इसीलिए उन्हें आशीर्वाद देने की जरूरत नहीं होती थी। आपको बस उनकी मौजूदगी में रहना होता था और उनके आभामंडल से निकलने वाली किरण आपको सुकून पहुंचाती थी।

माताजी अपने शारीरिक कद से कहीं ऊंची थीं। वे घर और स्थान के कामकाज संभालती थीं और बहुत मेहनत करती थीं। मुझे याद है किस तरह वो हर सुबह रसोई के पुराने उपकरण मथनी से मक्खन निकालती थीं। गुरुदेव इस बात पर जोर देते थे कि स्थान के मंदिर में इस्तेमाल किया जाने वाला घी शुद्ध होना चाहिए।

माताजी को काम करते देखकर एक बार मुझे भी जोश आ गया! मैंने माताजी का हाथ बंटाना चाहा और मक्खन मथने में लग गया, लेकिन मैं तो आधे काम में ही थककर चूर हो गया। आखिर माताजी को ही आगे बढ़कर उसे पूरा करना पड़ा। मैं तो बस देखता ही रहा। घर के इतने काम करने के बाद वो पढ़ाने के लिए स्कूल जाती थीं। कुछ घंटों बाद जब वे वापस लौटतीं, तो एक बार फिर घर के कामों का कभी ना थमने वाला सिलसिला शुरू हो जाता था!

इसमें कोई शक नहीं कि बहुत-से लोग कड़ी मेहनत करते हैं लेकिन आखिर वो उनकी तरह महारानी का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाते।

अपने माज़ी से ना शर्मिंदा रहो

रोज सूरज बनकर ताबिंदा रहो
मौत से बचने की एक तरकीब है
दूसरों के ज़हन में ज़िंदा रहो
दूसरों के ज़हन में ज़िंदा रहो